११. दिवस का अवसान

– अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

संभाषणीय

उद्धरण, मुहावरे, कहावतें आदि का उपयोग करते हुए किसी नियत विषय पर भाषण दीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों को भाषण के लिए विषय दें । ● उस विषय से संबंधित मुहावरे, कहावतें, सुवचन कहलवाएँ । ● उनका सटीक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें ।

दिवस का अवसान समीप था ।
गगन था कुछ लोहित हो चला ।
तरु शिखा पर थी अब राजती ।
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा ।।१।।

विपिन बीच विहंगम वृंद का ।
कलनिनाद विवर्द्धित था हुआ ।
ध्वनिमयी विविधा विहगावली ।
उड़ रही नभमंडल मध्य थी ।।२।।

अधिक और हुई नभ लालिमा ।
दश दिशा अनुरंजित हो गई ।
सकल पादप पुंज हरीतिमा ।
अरुणिमा विनिमज्जित-सी हुई ।।३।।

झलकने पुलिनों पर भी लगी ।
गगन के तल की यह लालिमा ।
सरि– सरोवर के जल में पड़ी ।
अरुणता अति ही रमणीय थी ।।४।।

अचल के शिखरों पर जा चढ़ी ।
किरण पादप शीश विहारिणी ।
तरणि बिंब तिरोहित हो चला ।
गगन मंडल मध्य शनैः शनैः ।।५।।

निमिष में वन व्यापित वीथिका ।
विविध धेनु विभूषित हो गई ।
धवल धूसर वत्स समूह भी ।
विलसता जिनके दल साथ था ।।६।।

परिचय

जन्म : १५ अप्रैल १८६५, निजामाबाद आजमगढ़ (उ.प्र.)
मृत्यु : १६ मार्च १९४७
परिचय : खड़ी बोली के प्रथम महाकाव्यकार 'हरिऔध' जी की भूमिका हिंदी साहित्य के विकास में नींव के पत्थर के समान हैं । भाषा पर 'हरिऔध' जी का अद्‌भुत अधिकार प्राप्त था। आपकी भाषा प्रांजल और आकर्षक है। आपकी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम शब्द, फारसी, उर्दू आदि के शब्दों के प्रयोग हृदयग्राही है ।
प्रमुख कृतियाँ : रस कलश (ब्रजभाषा में काव्यसंग्रह) वैदेही वनवास, प्रिय प्रवास (महाकाव्य) ठेठ हिंदी का ठाट, अधखिला फूल (उपन्यास), कबीर वचनावली, हिंदी भाषा और साहित्य का विकास (आलोचना) रुक्मणी परिचय, प्रद्‌युम्न विजय व्यायोग (नाटक) हरिऔध सतसई, कल्पलता, चुभते चौपदे, पारिजात (मुक्तक काव्य) ।

पद्‌य संबंधी

महाकाव्य : महाकाव्य में एक पूरी कथा का होना अनिवार्य है । महाकाव्य में मुख्य चरित्र के जीवन को समग्रता से विकसित किया जाता है । प्रत्येक सर्ग में एक ही छंद होता है किंतु सर्ग का अंतिम पद भिन्न छंद का होता है । सर्गों की संख्या आठ या इससे अधिक होती है ।

प्रस्तुत काव्यांश 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से लिया गया है । यहाँ 'हरिऔध' जी ने सायंकाल की प्राकृतिक छटा और गोकुल के ग्रामीण जीवन का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है ।

जब हुए समवेत शनैः शनैः ।
सकल गोप सधेनु समंडली ।
तब चले ब्रज भूषण को लिए ।
अति अलंकृत गोकुल ग्राम को ।।९।।

गगन मंडल में रज छा गई ।
दश दिशा बहु शब्दमयी हुई ।
विशद गोकुल के प्रति गेह में ।
बह चला वर स्रोत विनोद का ।।१०।।

सकल वासर आकुल से रहे ।
अखिल मानव गोकुल ग्राम के
अब दिनांत विलोकत ही बढ़ी ।
ब्रज विभूषण दर्शन लालसा ।।११।।

सुन पड़ा स्वर ज्यों कल वेणु का ।
सकल ग्राम समुत्सुक हो उठा ।
हृदय यंत्र निनादित हो गया ।
तुरत ही अनियंत्रित भाव-से ।।१२।।

बहु युवा - युवती गृह बालिका ।
विपुल बालक-वृद्‌ध-वयस्क भी ।
विवश-से निकले निज गेह से ।
स्वदृग का दुख मोचन के लिए ।।१३।।

इधर गोकुल से जनता कढ़ी ।
उमगती-पगती अति मोद में ।
उधर आ पहुँची बलबीर की ।
विपुल धेनु विमंडित मंडली ।।१४।।

—०—

(‘प्रिय प्रवास’ से)

श्रवणीय

यू ट्यूब पर मीराबाई के पद सुनिए और प्रमुख मुद्‌दों का आकलन कीजिए।

पठनीय

किसी सामाजिक विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोण से लिखे गए लेख पढ़िए।

कल्पना पल्लवन

‘नाश के दुख से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख’ इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

शब्द संसार

अवसान (पुं.सं.) = समाप्ति, सायंकाल
वल्लभ (पुं.सं.) = प्रियतम, स्वामी
विवर्धित (वि.सं.) = बढ़ाना, विवर्धन
तिरोहित (वि.) = छिपा हुआ, अंतर्निहित, गायब, लुप्त
निमिष (पुं.सं) = क्षण, पल
वीथि (बीथिका) (स्त्री.सं.) = गली, आकाश में नक्षत्रों के रहने का स्थान,
विलसता (क्रि.) = क्रीड़ा करना
विशद (वि.सं.) = विस्तृत रूप
आकुल (वि.सं.) = व्यग्र, विह्वल, कातर
विलोकना (क्रि.) = देखना
समुत्सुक (वि.सं.) = विशेष रूप से उत्सुक

आसपास

भाषा का सौंदर्य बढ़ाने वाले वाक्यों का संकलन कीजिए और अपनी बोलचाल एवं लेखन में प्रयोग कीजिए।

लेखनीय

अपने विद्यालय में मनाए गए हिंदी दिवस समारोह का वृत्तांत लेखन कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल पूर्ण :

कविता में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक

(ख) कथन सही या गलत लिखिए :

१. कथन मंडल में रज छा गई ।

२. विविध धेनु विभूषित हो गई।

(२) कविता के चतुर्थ चरण का भावार्थ लिखिए ।

(३) पाठ्यपुस्तक में आए हुए ऐसे दस शब्द ढूँढ़िए जिनसे पाँच स्त्रीलिंग और पाँच पुलिंग शब्द बनते हों ।

पाठ से आगे

प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करने वाली कविताएँ पढ़िए और अलंकारिक भाषा की प्रशंसा कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....